International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 823-825

उत्तररामचरित में वर्णित नायक का स्वरूप

डा० निशा खन्ना
अतिथि प्रवक्ता, आर्य कन्या इण्टर कालेज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

संस्कृत के कवियों में भाव प्रवणता और गम्भीरता की दृष्टि से महाकवि कालिदास के पश्चात् भवभूति का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। कुछ दृष्टियों में तो भवभूति कालिदास से भी ऊँचे हैं। इन्होंने केवल 3 नाटक लिखे हैं, जिनमें नाट्यकला की अपेक्षा कविकर्म बहुत उदात्त रूप में प्रकट हुआ है।

बाल्मीकि के समान वे एक ओर क्रौञ्चची के विरहगान से द्रवीभूत हैं, और दूसरी ओर व्याध को शापभिमूत करने के लिए उनकी वाणी में ओज भी भरा है। हृदय की इस भावधारा का असर उनके नाटकों पर भी पड़ा है, जिनमें करुण और वीर रस की अभिव्यक्ति हुई है, किन्तु वे करुण रस के बड़े समर्थक हैं –

''एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्।
भिन्नः पृथक्पृथगिव श्रयेत विवर्तान्
आवर्तबुद्बुद्तरग्मयान्विकारा –
नम्भो यथा, सलिलमेव हि तत्समस्तम।।
उत्तररामचरितम् – 3/47

''उत्तररामचरितम्'' नाटक भवभूति की अन्तिम और सर्वश्रेष्ठ कृति है। उनकी नाट्य प्रतिभा का सर्वोच्च प्रमाण है। लटा–विजय के पश्चात् राम के अयोध्या में राज्याभिषेक के अनन्तर प्रजा–वर्ग के इस संदेह पर कि सीता कई मास रावण के यहाँ रहीं तो फिर राम ने अपने यहाँ उन्हें कैसे रख लिया, सीता की पवित्रता और अग्निराद्वि की बात जानते हुए भी राम ने प्रजा के अनुरंजन के लिए अनुकूल बहाना ढूंढकर सीता को वन में निर्वासित कर दिया। इस नाटक की कथा यहीं से आरम्भ होती है और अश्वमेध यज्ञ के समय राम–सीता के पुनर्मिलन होने पर समाप्त होती है। इस नाटक में करुण रस की प्रधानता है। उसके हृदयस्पर्शी वर्णन में भवभूति, कालिदास से भी आगे बढ़ गये हैं,, अतः उनके लिये यह उक्ति अत्यन्त प्रसिद्ध एवं चरितार्थ सिद्ध होती है –

''उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।''

''उत्तररामचरितम'' का मूल कथानक बाल्मीकी रामायण के उत्तरकाण्ड पर आधारित है। इस नाटक में सात अट हैं, जिनमें राम के अद्भुत चरित्र को दर्शाया गया है।

भारतीय मनीषा राम–महिमा से दीप्त है और प्रायः भारतीय चित्त राम की महिमा से सिकत है। माँ की लोरी से लेकर शवयात्रा तक, महलों से कुटिया तक, विवाह प्रसङ्ग से लेकर रणभूमि तक, भोजन से भजन तक, राम–नाम का अमृत और तेज व्याप्त है। लोकजीवन, लोक संस्कृति, लोक साहित्य, व लोक में ''राम'' का नाम समाहित है। समस्त भारतीय साहित्य और जीवन में रामकथा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। रामकथा भारत में जन–जन का प्राण है।

भारतवर्ष की अधिकांश प्रादेशिक भाषाओं में बाल्मीकीय रामायण का आधार लेकर अनेक रामकाव्यों एवं नाटकों की रचना की गयी। अब रामकथा, केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व की सम्पत्ति है। अब चीन, जापान, मंगोलिया, तिब्बत, तुर्किस्तान, मलयेशिया, इण्डोनेशिया आदि विभिन्न देशों तक रामकथा का प्रचार एवं प्रसार हुआ है तथा भारतीय धर्म और संस्कृति को जीवित रखने का प्रयास किया गया है।

भवभूति संस्कृत साहित्य की विभूति हैं। उनका ''उत्तररामचरितम्'' नाटक संस्कृत का अत्यन्त प्रसिद्ध नाटक है। यह ''विश्व साहित्य की वस्तु'' है। इसमें ''राम के आदर्श'' का मार्मिक निरूपण हुआ है। इस नाटक के सदृश मग्लकारी नाटक कठिनता से ही मिलता है। यह नाटक सभी अवस्थाओं में सुख–दुःख का अनुपम समन्वय है। इसमें सर्वत्र आनन्द और करुणा की धारा प्रवाहित होती रहती है। इस नाटक को देखने, पढ़ने अथवा सुनने से हृदय को अपार विश्राम प्राप्त होता है।

भवभूति चरित्र–चित्रण में अत्यन्त कुशल हैं। उनके पात्र सजीव, सक्रिय, उत्साहयुक्त, स्फूर्तियुक्त हुयें, उनमें संघर्ष करने की शक्ति है। उनके पात्रों में सभी मानवीय गुण विद्यमान है।

भवभूति के ''राम'' कर्त्तव्यनिष्ठ हैं, वे कर्त्तव्य निष्ठा के कारण ही सीता का परित्याग कर देते हैं किन्तु एक आदर्शपति के रूप में उन्हें सीता–वियोग से उतना ही दुःख है, जितना एक सामान्य व्यक्ति को होता है। वे बार–बार विलाप करते हैं और मूर्च्छित हो जाते हैं। उनका रोना मनुष्यमात्र को ही नहीं बल्कि पर्वतों और बज्र का भी हृदय द्रवित कर देता है।

''उत्तररामचरितम्'' के नायक ''राम'' हैं जिन्हें इस नाटक में राम या रामभद्र के नाम से सम्बोधित किया गया है। इस नाटक मे ''राम'' को एक सम्राट के रूप में चित्रित किया गया है। उन्हें कहीं भी भगवान नहीं कहा गया है। राम इक्ष्वाकु वंश के प्रतिष्ठित राजा तथा दशरथ के प्रियनन्दन हैं।

वे एक आदर्श राजा, आदर्श पति और आदर्श भ्राता हैं। उनका चरित्र लोकोत्तर है। उनके धीरोदात्त नायक के सभी गुण विद्यमान हैं। इस नाटक के राम विनम्र एवं सुशील, आदर्शप्रेमी, आदर्श पति, प्रजानुञ्जक राजा हैं तथा उनका व्यक्तित्व वीर, गम्भीर एवं प्रभावशाली है। अब इन्हीं का विस्तृत विवेचन किया जा रहा है –

नाटक के प्रत्येक अट में राम की उदात्तता प्रकट होती है। प्रथम अट में ही उनके चरित्र की अनेक विशेषतायें पाई जाती हैं। वृद्धजनों के प्रति उनके हृदय में अत्यन्त सम्मान है। पूर्व अभ्यास के कारण जब क/ुकी उन्हें ''रामभद्र'' सम्बोधित करके पुनः महाराज कहता है तो राम उससे कहते हैं कि ''पिता के परिजनों का मेरे लिए ''रामभद्र'' इस शब्द से व्यवहार करना ही शोभा देता है अतः पूर्वाभ्यास के अनुसार ही बोलिये – **''आर्यु ननु रामभद्र इत्येव मां प्रत्युपचारः शोभते तातपरिजनस्य। तद् यथाभ्स्तमधीयताम्।''**

इसी प्रकार जटायु तथा अन्य लोगों के प्रति भी उनके हृदय में अपार श्रद्धा है। भगवती भगीरथी को देखकर राम उनके प्रति भी अपना सहज भक्तिभाव प्रकट करते हैं। वे महा उपकारी हनुमान् के उपहार को नहीं भुलाते हैं, जिससे राम की कृतज्ञता भी प्रकट होती है।

भवभूति के राम अत्यन्त विनम्र एवं साधु स्वभाव के हैं। उनकी विनम्रता तब पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है, जब वे परशुराम के प्रति किये गये अपने शौर्य को बहाने से नहीं दिखाना चाहते हैं। ''अरे! अभी तो बहुत देखना है, इसलिए और कुछ दिखाओं।

इसी प्रकार जब लक्ष्मण मन्थरा के चित्र को दिखाते हैं तब वे माता कैकेयी के वृत्तन्त को टालने के लिए शीघ्र ही निषादपति के साथ समागम करने लगते हैं, तब लक्ष्मण कहते हैं–

''अयं! मध्यममाम्बावृतान्तोऽन्तरति आर्येण।'' अर्थात् अरे! आर्य राम ने मझली माता के वृत्तान्त को छिपा दिया है।

''उत्तररामचरितम्'' में राम का सबसे अच्छा गुण यह है ि कवह दूसरों की प्रशंसा करत है; परन्तु अपनी प्रशंसा उन्हें अधिक अच्छी नहीं लगती। इसी कारण जब गुप्तचर यह कहता है कि ''पुरवासी तथा नगरनिवासी आपकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हैं तो राम कहते हैं कि यह तो केवल मेरी प्रशंसा हुई कुछ दोष तो बताओ जिससे उससे बचा जा सके –

''राम अर्थवाद एवैषः। दोषं तु में कथंचित्कथय येन प्रतिविधीयते।।''

भवभूति ने राम को प्राणिमात्र के प्रति अपार प्रेम रखने वाला बताया है। वे प्रजा को खुश रखना, राजा का सर्वोपरि कर्त्तव्य मानते हैं। प/वटी के वृक्ष एवं पशु–पक्षी भी उनके बन्धु हैं। गिरिमयूर और करिकलभ को राम पुत्र के समान मानते हैं तभी तो ''गिरिमयूर'' को ''मोदस्व वत्स मोदस्व'' तथा करिकलभ को ''विजयाताभयुष्मान्'' इस प्रकार कहकर आशर्वाद देते हैं।

नाटक के प्रथम अट में वे दो रूपों में प्रस्तुत होत हैं – एक ओर तो वे सीता के प्राणवल्लभ, अनन्यप्रेमी, आदर्शपति के रूप में आते हैं और दूसरी ओर जनानुरञजक आदर्श राजा के रूप में दृष्टिगोचर होत हैं। उनके ये दोनों ही रूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है –

''स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मु/तो नास्ति मे व्यथा।।
(उत्तररामचरितम् – 1/13)

अर्थात् प्रजानुरञजन के लिए, स्नेह, दया, सुख तथा जानकी को भी छोड़ते हुये मुझे कोई पीड़ा नहीं है। इससे राम की प्रजा के प्रति कर्त्तव्य भावना पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है परन्तु वे सीता पर अपने स्वामित्व को आरोपित करते हैं। किन्तु यह उनका दोष होकर भी गुणस्वरूप ही है, क्योंकि सीता उनकी शक्ति है, सहधर्मिणी है, धर्मपत्नी है। राम और सीता स्थूल दृष्टि से पृथक होते हुए भी सूक्ष्म दृष्टि से एक है।

अर्थात् प्रजानुरञजन के लिए कठिन से कठिन कार्य करने के लिए तैयार रहते हैं। शूद्र मुनि का वध वे प्रजा के हित के लिए ही करते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि भवभूति के राम प्रजा के अनुरंजन के लिए अकरणीय कार्य को भी सहजरूप में कर देते हैं – यथा – सीता जैसी आदर्श पत्नी का परित्याग तथा शूद्र मुनि का वध।

यद्यपि राम जनता की इच्छा में सीता का परित्याग करते हैं, किन्तु राम के ऊपर क्या बीतती है, यह ''उत्तररामचरितम्'' के पाठकों से छिपा नहीं हैं।

उनकी आन्तरिक असहनीय पीड़ा का अनुमान श्लोक के द्वारा लगाया जा सकता है –

''दलति हृदयं शोकोद्वेगाद्द्विधा तु न भिद्यते
वहति विकलः कायो मोहं न मु/ति चेतनाम्।
ज्वलयति तनूमन्तर्दाहः करोति न भस्मसात्
प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्।।''
(उत्तररामचरितम्–3/31)

अर्थात् (मेरा) हृदय शोक की व्याकुलता से पाट रहा है परन्तु दो टुकड़ों में विभक्त नहीं होता। व्याकुल शरीर मूर्छित होत है,, परन्तु चेतना को नहीं छोड़ता। आन्तरिक सन्ताप शरीर को जला रहा है, परन्तु भस्म नहीं करता। मर्मस्थल को बींधने वाला भाग्य प्रहार करता है, परन्तु जीवन को सर्वथा नष्ट नहीं करता।

राम सीता के वियोग को भी किसी प्रकार से सहन कर असाधारण धैर्य का परिचय देते हैं। सीता को त्यागे 14 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, परन्तु राम अभी जीवित हैं, इससे अधिक धैर्य क्या होगा। पहले भी सीता वियोग हुआ था किन्तु वह सीमित था। इस समय का सीता वियोग निरवधि है, किन्तु वे इस महान दुःख को भी अपने हृदय में छिपाकर स्वयं व्यथित रहते हैं। उनका करुणरस पुटपाक प्रतीकाश है –

''अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढधनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।''
(उत्तररामचरितम् –3/1)

इस श्लोक द्वारा राम की गम्भीरता पकट होती है। पंचवटी में वे अपने शोक के आवेग को रोक नहीं पाते। तब वासन्ती उन्हें देखकर दुःखित होती है, तब राम कहने लगते हैं कि सखि वासन्ति! अब तो राम का दर्शन भी मित्रों को दुःख प्रदान करने के लिये है अतः अब मुझे जाने दो।

''उत्तररामचरितम्'' में राम को एक **''आदर्श पति''** के रूप में भी चित्रित किया गया है। राम सीता के प्रति अखण्ड विश्वास रखते हैं। वे अग्निशुद्धि की वार्त्ता सुनकर सीता को क्षमायाचना करते हैं। उनकी दृष्टि में सीता गगजल तथा अग्नि से भी पवित्र है। सीता के प्रति उनके मन में अगाध प्रेम है। सीता के स्पर्शमात्र से वे अनिर्वचनीय तथा असीम आनन्द की अनुभूति करते हैं। सीता उनके घर की लक्ष्मी है। सीता को पाकर राम अपने को धन्य एवं कृतकृत्य मानते हैं।

सीता का वियोग राम के लिए अत्यन्त असहनीय है। राक्षसराज रावण के द्वारा सीता के अपहृत कर लिए जाने पर राम इतने रोते हैं कि उनके दुःख से पत्थर भी रो पड़ते हैं। राम को सब कुछ सह्य है, यदि परम असह्य है तो वह है सीता का वियोग। आज भी सीता–वियोग की वह स्मृति राम को व्यथित कर देती है तथा उनके आँखों से आँसू भी छलक आते हैं।

भवभूति के चरित्र की सबसे बड़ी परीक्षा यहीं पर होती है कि वे जिस सीता के वियोग की स्मृति को भी सहन नहीं कर पाते हैं, उसी सीता को प्रजानुरञजन के लिए त्यागते हुये स्वयं भयटर परिणाम वाली वियोग अग्नि में प्रवेश करते हैं।

राम का कथन है– 'सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधन व्रतम्।''
(उत्तररामचरितम्–1/41)

अर्थात् चाहे जो कुछ भी हो, जनता को प्रसन्न रखना सज्जनों का

कर्त्तव्य है।
सीता के परित्याग में भी उनका पूर्ण आदर्श पाया जाता है। वे सीता के परित्याग से स्वयं को पापी मानते हैं। वे सीता के विषय में कहते हैं, इसने अपने जन्म से समस्त धरती को पवित्र कर दिया है। इसके शील की सराहना अरुन्धती, वशिष्ठ आदि ऋषि भी करते हैं। इसका सम्पूर्ण जीवन राममय है।
सीता के त्याग रूपी कार्य से राम अत्यन्त क्षुब्ध होते हैं और विचार करते हैं कितना नृशंस कार्य कर रहा हूँ। जिसका एकमात्र आश्रय मैं ही हूँ, उसे धोखा देकर निर्वासित कर रहा हूँ। अतः मैं अत्यन्त पापी हूँ।
वे भौतिक दृष्टि से तो सीता का परित्याग करते हैं परन्तु अपने आन्तरिक स्नेह से माँ वसुन्धरा से प्रार्थना करते हैं कि अब आगे वे ही सीता को देख–रेख करें।
इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि भवभूति के राम एक ओर जहाँ आदर्श राजा हैं वही दूसरी ओर आदर्श पति भी हैं। वे यज्ञ में अपनी सहधर्मचारिणी के रूप में सुवर्णमयी सीता की प्रतिमा को ही विनियुक्त करते हैं, जिसको देखकर वासन्ती सहसा कह उठती है –

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति।।
(उत्तररामचरितम् – 2/7)

वस्तुतः राम की यही महत्ता है कि एक ओर तो वे लोककथन से प्रिया सीता का परित्याग कर देते हैं तथा दूसरी ओर समर्थ होते हुए भी अजन्यभाव से सीता के प्रति आदर्श प्रेम को प्रदर्शित करते हैं, अपितु अश्वमेध यज्ञ के समय सहधर्मचारिणी के रूप में पवित्र सीता की प्रतिकृति को ही पत्नी के रूप में रखते हैं।
इस प्रकार हम देखते हैं कि ''उत्तररामचरितम्'' में भवभूति के राम का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली है। उन्हें देखकर सहसा ही सभी प्रभावित हो उठते हैं। लव राम को देखकर म नही मन कहने लगता है कि ये महापुरुष पवित्र और सामर्थ्य से युक्त हैं। लव कहत हैं – कि इनके (राम के) दर्शन से ही वैर शान्त हो गया है। मेरा वह दर्द न जाने कहाँ चला गया है? नम्रता मुझे झुका रही है, इनके देखने पर न जाने क्यों पराधीन सा हो गया हूँ –

''विरोधो विश्रान्तः प्रसरति रसो निर्वृतिघन
स्तदौद्वत्यं क्वापि व्रजाति विनयः प्रनयति माम्।
झटित्यस्मिन्दृष्टे किमिति परवानस्मि यदि वा
महार्धस्तीर्थानामिव दृि महतां कोऽप्यतिशयः।।''
(उत्तररामचरितम्– 6/11)

जब राम को गुरूजनों के समक्ष उपस्थित होना अनिवार्य हो जाता है तो उनकी आत्मग्लानि चरम सीमा पर पहुँच जाती है। सीता के प्रति उन्हें अन्त तक प्रगाढ़ प्रेम रहता है।
भवभूति के राम के धीरोदात्त व्यक्तित्व में शील, गाम्भीर्य, सदाचार, मानवता, करुणा, कर्त्तव्यपरायणता तथा सच्चरित्रता आदि सभी गुण साकार हो उठते हैं।
''उत्तररामचरितम्'' के जो राम हैं वो सभी सद्गुणों की प्रतिमूर्ति हैं और कर्त्तव्य पालन में वे अत्यन्त कठोर हैं। किन्तु कुछ स्थानों पर वह उतने ही मृदु भी हैं। लव और कुश को देखकर आनन्द विभोर हो जाते है और दोनों की वीरता की प्रशंसा करते हैं। जब राम दोनों को हृदय से लगाते हैं तो उनमें वात्सल्य रस का अपूर्व प्रवाह बहने लगता है। भवभूति के राम एक आदर्श महापुरुष हैं।

इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि राम का चरित्र अनुकरणीय तथा पूजनीय है। राम के चरित्र से यह भी शिक्षा मिलती है कि एक शत्रु से भी किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए। सम्पूर्ण संसार में राम के चरित्र का प्रभाव अतुल्य है तथा युगों – युगों तक अक्षुण्ण बना रहेगा।

संदर्भ

1. उत्तररामचरितम – अनुवादक डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
2. उत्तररामचरितम् – अनुवादक डॉ० तारिणीश झा
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास – वाचस्पति गैरोता
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ० नानूराम व्यास और पाण्डेय
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ० कपिलदेव द्विवेदी